समाचार पत्र का नाम........The Tribune........
दिनांक 23. 9. 2019...... पृष्ठ सं. 2 .... कॉलम 7-8......

SYMPOSIUM ON VARSITY RANKINGS

Hisar: A two-day national symposium on the ranking of agricultural universities in the country was organised by Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University in association with the Indian Agricultural Universities Association. Prof KP Singh, Vice Chancellor, HAU, said universities were creators of knowledge and to do so, they should possess excellent world-class laboratory facilities, international research collaborations and faculty exchange programmes. He also suggested enrolment of adjunct faculty for improving teaching as well as research.

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम ....दैनिक जागरण....
दिनांक 24. 9. 2019 पृष्ठ सं. 2 कॉलम 1-6

अब प्रदेश में उगा आर्गेनिक केला खाएंगे हरियाणावासी

एचएयू ने एक एकड़ में केला लगाकर किया था प्रयोग, छह महीने में तैयार हुई फसल, रसायनरहित प्रयोगों से तैयार हुआ केला

वैभव शर्मा • हिसार

महाराष्ट्र और गुजरात राज्य में सबसे अधिक केले की खेती की जाती है। अब हरियाणा के किसान भी लोगों को केले का स्वाद चखा सकते हैं। एचएयू यानि हरियाण कृषि विश्वविद्यालय ने पहली बार हिसार में ड्राई जमीन होने के बावजूद एक एकड़ में आर्गेनिक तरीके को अपनाकर केले की फसल उगाई है। इसमें उन्हें बड़ी सफलता मिली गई है। मार्च महीने में लगाए गए पौधे महज 7 माह से भी कम समय में फलदार बन चुके हैं। अक्सर हरियाणा के अधिकांश इलाकों में केले लगाने से वह पनप नहीं पाते थे। मगर जैविक तरीका और तापमान को मेंटेन करने के बाद ग्रैंड नेने वैरायटी के केले के 1280 पौधों में से अधिकांश पर 40 किलो वजनी केले उत्पन्न हो रहे हैं। इन्हें जल्द ही एचएयू प्रशासन विवि में ही बने एचएयू मार्ट के जरिए लोगों में बिक्री भी करेगा। इस केले का सबसे बड़ा फायदा है कि इसको उगाने व पकाने तक में किसी प्रकार के केमिकल का प्रयोग नहीं किया गया है।

जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए लगाए केले : होर्टिकल्चर में असिस्टेंट डायरेक्टर डा. सुरेश कुमार बताते हैं कि दिल्ली से लेकर इंटरनेशनल मार्केट में आर्गेनिक यानि बिना केमिकल के खेती से उत्पन्न होने वाले उत्पादों की अधिक डिमांड है। मगर किसान विभिन्न फसलों में डीएपी, यूरिया, छिड़काव आदि करते हैं। खेती को केमिकल मुक्त बनाने के लिए एचएयू ने पं. दीनदयाल उपाध्याय सेंटर ऑफ एक्सेलेंस फॉर ऑर्गेनिक फार्मिंग शुरू की है, इसमें आर्गेनिक तरीके से खेती की गई।

हिसार के एचएयू के ऑर्गेनिक फार्म में एक एकड़ भूमि पर तैयार केले की फसल।

ड्रिप सिंचाई से दिया जाता है पानी

खास बात है कि केले को अक्सर अधिक पानी की आवश्यकता होती है, मगर हरियाणा में पानी की काफी कमी है। ऐसे में केले को उगाने के लिए एचएयू ने ड्रिप सिंचाई प्रणाली का प्रयोग किया। पाइपों के जरिए जितनी जरूरत है, उतना ही पानी दिया जा रहा है।

इसलिए नहीं उगता था प्रदेश में केला

दरअसल केला ऐसे इलाकों में होता है जहां मौसम एक सा रहता है। महाराष्ट्र और गुजरात के कई इलाके में केले को उगाने के लिए मौसम एकसमान रहता है इसलिए वहां पैदावार अधिक होती है, जबकि हरियाणा ड्राई स्टेट में आता है। यहां सर्दी से अक्सर केले नष्ट हो जाते थे, ऐसे में एचएयू ने आगे केले को बचाने के लिए आर्टिफीशियल तापमान की व्यवस्था भी की हुई है।

> पं. दीनदयाल उपाध्याय सेंटर ऑफ एक्सेलेंस फॉर ऑर्गेनिक फार्मिंग के जरिए हमने सबसे पहले केले पर प्रयोग शुरू किए जो सफल रहे हैं। अब हम आंवला, अमरूद, किन्नू आदि फसलों को भी इसी तरीके से बिना केमिकल और कम पानी के उगा रहे हैं। लोगों की धारणा थी कि हिसार में केले उग नहीं सकते, अब इसका लोगों को इन केले व अन्य आर्गेनिक फलों का स्वाद चखने का मौका मिलेगा।
>
> **प्रो. केपी सिंह,** कुलपति, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 22.9.2019 पृष्ठ सं. 6 कॉलम 1-3

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने दिया सम्मान

स्वर्गीय डॉ. पृथ्वी सिंह लांबा व डॉ. देव राज भूंबला को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्ष 2015-16 के लिए स्वर्गीय डॉ. पृथ्वी सिंह लांबा व वर्ष 2017-18 के लिए डॉ. देव राज भूंबला को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया। ये अवार्ड विश्वविद्यालय में आयोजित 13 वें आइएयूए की राष्ट्रीय संगोष्टी के अवसर पर गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने प्रदान किए स्वर्गीय डॉ. पृथ्वी सिंह लांबा की ओर से उनके बड़े बेटे परमजीत सिंह व डॉ. देव राज भूंबला की ओर से डॉ. गुरिंदर कौर सांघा, डीन, पीजीएस, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने यह अवार्ड प्राप्त किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.के.पी. सिंह ने कहा कि दोनों महान विभूतियों को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान करना अत्यंत सम्मान का विषय है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक जो अपने जीवन में कृषि व कृषक के उत्थान में लगे रहे । उनके उत्कृष्ठ कार्यों, उपलब्धियों तथा कृषि शिक्षा, अनुसंधान व विस्तार में उनके महत्वपूर्ण योगदान को हमेशा याद रखेगा। उन्होंने बताया कि लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड उस प्रमुख/ अधिकारी को दिया जाता है जिन्होंने आजीवन उच्च मानकों का पालन करते हुए अपने क्षेत्र में उत्कृष्ठता हासिल की हो तथा अपने करियर के दौरान उच्च मूल्यों के साथ साथ विश्वविद्यालय को उच्चाइयों तक ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। डॉ. लाम्बा का हिसार के दौलतपुर गांव में 10 अक्तूबर, 1920 को जन्म हुआ था। उन्होंने एग्रीकल्चर कालेज, लायलपुर (पाकिस्तान) से 1940 में कृषि विषय में स्नातक डिग्री, 1943 में पंजाब यूनिवर्सिटी से पौध प्रजनन विषय में स्नातकोत्तर डिग्री तथा विसकोंसिन यूनिवर्सिटी, अमेरिका से 1949 में पी-एच. डी. डिग्री हासिल करने के उपरांत भोपाल के कृषि विभाग से अपनी सेवा यात्रा आरंभ की। उन्होंने वहां मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा कृषि निदेशक के पदों पर कार्य करते हुए इंदौर और सिहोर में कृषि कालेज तथा जबलपुर में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई और उपरोक्त पदों पर कार्य करते हुए कृषि कालेज, भोपाल के प्राचार्य का पदभार भी संभाला।

एचएयू ने स्वर्गीय डॉ. पृथ्वी सिंह लांबा व डॉ. देव राज भूंबला के परिजनों को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड देते पदाधिकारी।

कृषि आयुक्त भी रहे डॉ. देव राज भूंबला

डॉ. देव राज भुंबला का जन्म 12 जून 1921 को हुआ था। उन्होंने 1 अक्तुबर 1981 को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति के रूप में पद संभाला। कुलपति के रूप में, उन्होंने विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा और अनुसंधान के विकास के लिए नए आयाम स्थापित किए। उन्हें द्विवार्षिक (1972-73) के लिए मृदा विज्ञान में उत्कृष्ट शोध के लिए प्रतिष्ठित रफी अहमद किदवई पुरस्कार (कृषि में सर्वोच्च पुरस्कार) से सम्मानित किया गया।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक जागरण
दिनांक 22-9-2019 पृष्ठ सं. 15 कॉलम 3-8

एचएयू के दो वैज्ञानिकों को मिला लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

जागरण संवाददाता, हिसार : देश में कृषि विकास और कई बड़े शिक्षण संस्थानों को स्थापित कराने वाले दो वैज्ञानिकों को एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा है। इसमें वर्ष 2015-16 के लिए स्वर्गीय डा. पृथ्वी सिंह लांबा व वर्ष 2017-18 के लिए डा. देव राज भूंबला को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया।

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने किया सम्मानित

यह अवार्ड विश्वविद्यालय में आयोजित 13वें आइएयूए की राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत द्वारा प्रदान किया गया। स्वर्गीय डा. पृथ्वी सिंह लांबा की ओर से उनके बड़े बेटे परमजीत सिंह व डा. देव राज भूंबला की ओर से पंजाब एग्रिकल्चर विवि में डीन पीजीएस डा. गुरिंदर कौर सांघा ने प्राप्त किया।

इस अवार्ड में सम्मान पट्टिका, प्रशस्ति पत्र और एक लाख रुपये का नकद पुरस्कार शामिल है।

स्वर्गीय डा. पीएस लांबा

- हिसार के दौलतपुर गांव में 10 अक्टूबर 1920 को डा. पीएस लांबा का जन्म हुआ।
- एग्रीकल्चर कालेज, लायलपुर (पाकिस्तान) से 1940 में कृषि विषय में स्नातक डिग्री, 1942 में पंजाब यूनिवर्सिटी से पौध प्रजनन विषय में स्नातकोत्तर डिग्री तथा अमेरिका की विसकोंसिन यूनिवर्सिटी से 1949 में पी-एच.डी. डिग्री हासिल की।
- भोपाल के कृषि विभाग में मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा कृषि निदेशक के पदों पर कार्य, इंदौर और सिहोर में कृषि कालेज तथा जबलपुर में कृषि विश्वविद्यालय स्थापित करने में अहम भूमिका निभाई।
- एचएयू में 1969 में कृषि महाविद्यालय के डीन का पदभार संभालने के बाद वह 1971 से 1973 तक अनुसंधान निदेशक रहे।
- 1977 में इस विवि का कुलपति बनने से पूर्व वह महाराणा प्रताप यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एण्ड टेक्नोलॉजी, उदयपुर के कुलपति रहे।
- हकृवि में कुलपति के रूप में उनके चार वर्ष के कार्यकाल दौरान काफी सुधार किए।
- वह 1978-79 तक ऑल इंडिया एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटीज एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रहे।

एचएयू में गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत से पूर्व वैज्ञानिक स्वर्गीय डा. लांबा के पुत्र प्रतिनिधि के तौर पर लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड ग्रहण करते हुए। ● जागरण

- डा. देव राज भूंबला का जन्म 12 जून 1921 को हुआ था।
- एमएससी (एग्री.) लुधियाना से मृदा विज्ञान में और पीएचडी अमेरिका के ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी से मृदा रसायन विज्ञान में की।
- 1 अक्टूबर 1981 को एचएयू हिसार के कुलपति के रूप में पद संभाला।
- कुलपति के रूप में उन्होंने विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा और अनुसंधान के विकास के लिए नए आयाम स्थापित किए।

डा. देव राज भूंबला

- एचएयू में कृषि महाविद्यालय के डीन व अनुसंधान निदेशक व मृदा विज्ञान के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया।
- विवि के अलावा कृषि आयुक्त, भारत सरकार, उप महानिदेशक, आइसीएआर, संस्थापक निदेशक, केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल (आइसीएआर) तथा परियोजना निदेशक, लैब टू लैंड प्रोग्राम (आइसीएआर) इत्यादि पदों पर रहे।
- उनके पास पत्रिकाओं और पत्रिकाओं की ख्याति के 200 से अधिक शोध लेख और कुछ पुस्तकें हैं।
- उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक समितियों का सदस्य होने का सम्मान भी प्राप्त है।

हिसार से निकलकर देशभर में अपने ज्ञान की ज्योति से कृषि के क्षेत्र को दोनों ही विभूतियों ने बढ़ाने का काम किया। इन दोनों वैज्ञानिकों ने एचएयू में कई अंतरराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिकों को तैयार किया। लाइफ टाइम एचीवमेंट अवार्ड उस अधिकारी को दिया जाता है, जिन्होंने आजीवन उच्च मानकों का पालन करते हुए अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल की हो।
प्रो केपी सिंह, कुलपति, एचएयू, हिसार।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम पँजाब केसरी

दिनांक 22.9.2017 पृष्ठ सं 2 कॉलम 7-8

हकृवि ने दिए लाइफ टाइम अचीवमैंट अवार्ड

हिसार, 21 सितम्बर (ब्यूरो): चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्ष 2015-16 के लिए स्व. डा. पृथ्वी सिंह लांबा व वर्ष 2017-18 के लिए डा. देव राज भूंबला को लाइफ टाइम अचीवमैंट अवार्ड से सम्मानित किया। यह अवार्ड विश्वविद्यालय में आयोजित 13 वें आई.ए.यू.ए. की राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत द्वारा प्रदान किए गए। स्व. डा. पृथ्वी सिंह लाम्बा की ओर से उनके बड़े बेटे परमजीत सिंह व डा. देव राज भूंबला की ओर से डा. गुरिंदर कौर सांघा, डीन, पी.जी.एस., पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने यह अवार्ड प्राप्त किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.के.पी. सिंह ने कहा कि दोनों महान विभूतियों को लाइफ टाइम अचीवमैंट अवार्ड प्रदान करना अत्यंत सम्मान का विषय है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक जो अपने जीवन में कृषि व कृषक के उत्थान में लगे रहे हकृवि उनके उत्कृष्ट कार्यों, उपलब्धियों तथा कृषि शिक्षा, अनुसंधान व विस्तार में उनके महत्वपूर्ण योगदान को हमेशा याद रखेगा।

राज्यपाल लाइफ टाइम अचीवमैंट अवार्ड देते हुए।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम ......नभ छोर......
दिनांक 21-9-2019 पृष्ठ सं. 8 कॉलम 3-8

लांबा व भूंबला को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड

हिसार/21 सितंबर/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्ष 2015-16 के लिए स्वर्गीय डॉ. पृथ्वी सिंह लांबा व वर्ष 2017-18 के लिए डॉ. देव राज भूंबला को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया। ये अवार्ड विश्वविद्यालय में आयोजित 13 वें आइएयूए की राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत द्वारा प्रदान किए गए। स्वर्गीय डॉ. पृथ्वी सिंह लांबा की ओर से उनके बड़े बेटे परमजीत सिंह व डॉ. देव राज भूंबला की ओर से डॉ. गुरिंदर कौर सांघा, डीन, पीजीएस, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने यह अवार्ड प्राप्त किया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.के.पी. सिंह ने कहा कि दोनों

महान विभूतियों को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान करना अत्यंत सम्मान का विषय है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक जो अपने जीवन में कृषि व कृषक के उत्थान में लगे रहे हकृवि उनके उत्कृष्ठ कार्यों, उपलब्धियों तथा कृषि शिक्षा, अनुसंधान व विस्तार में उनके महत्वपूर्ण योगदान को हमेशा याद रखेगा। उन्होंने बताया कि लाइफ़ टाइम अचीवमेंट अवार्ड उस प्रमुख/अधिकारी को दिया जाता है जिन्होंने आजीवन उच्च मानकों का पालन करते हुए अपने क्षेत्र में उत्कृष्ठता हासिल की हो तथा अपने करियर के दौरान उच्च मूल्यों के साथ साथ विश्वविद्यालय को ऊंचाईयों तक ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। ये दोनों महान विभूतियां विद्यार्थियों और वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। यह विश्वविद्यालय सदैव उनका ऋणी रहेगा। इस अवार्ड में सम्मान पटिका, प्रशस्ती पत्र और एक लाख रूपए का नकद पुरस्कार शामिल है।

लोक संपर्क कार्यालय

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम....नित्य शक्ति टाइम्स....

दिनांक..21. 9. 2019...... पृष्ठ सं....6...... कॉलम....5-8....

डा. लांबा व डा. भूंबला को मिला लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड

हिसार, 21 सितम्बर (निस)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्ष 2015-16 के लिए स्वर्गीय डॉ पृथ्वी सिंह लांबा व वर्ष 2017-18 के लिए डॉ. देव राज भूंबला को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया। ये अवार्ड विश्वविद्यालय में आयोजित 13 वें आइएयूए की राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने प्रदान किए। स्वर्गीय डॉ. पृथ्वी सिंह लांबा की ओर से उनके बड़े बेटे परमजीत सिंह व डॉ. देव राज भूंबला की ओर से डॉ. (श्रीमती) गुरिंदर कौर सांघा, डीन, पीजीएस, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने यह अवार्ड प्राप्त किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.केपी सिंह ने कहा कि दोनों महान विभूतियों को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान करना अत्यंत सम्मान का विषय है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतराष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक जो अपने जीवन में कृषि व कृषक के उत्थान में लगे रहे हकृवि उनके उत्कृष्ट कार्यों, उपलब्धियों तथा कृषि शिक्षा, अनुसंधान व विस्तार में उनके महत्वपूर्ण योगदान को हमेशा याद रखेगा। उन्होंने बताया कि लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड उस प्रमुख/अधिकारी को दिया जाता है जिन्होंने आजीवन उच्च मानकों का पालन करते हुए अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल की हो तथा अपने करियर के दौरान उच्च मूल्यों के साथ साथ विश्वविद्यालय को उच्चाइयों तक ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। ये दोनों महान विभूतियां विद्यार्थियों और वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं। यह विश्वविद्यालय सदैव उनका ऋणी रहेगा। इस अवार्ड में सम्मान पट्टिका, प्रशस्ती पत्र और एक लाख रूपए का नकद पुरस्कार शामिल है।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम: सिटी पल्स
दिनांक: 21.9.2019 पृष्ठ सं.: 3 कॉलम: 1-5

डॉ. लांबा व डॉ. भूंबला को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से किया सम्मानित

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्ष 2015-16 के लिए स्वर्गीय डॉ. पृथ्वी सिंह लांबा व वर्ष 2017-18 के लिए डॉ. देव राज भूंबला को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया। ये अवार्ड विश्वविद्यालय में आयोजित 13 वें आइएसयूए की राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत द्वारा प्रदान किए गए। स्वर्गीय डॉ. पृथ्वी सिंह लांबा की ओर से उनके बड़े बेटे परमजीत सिंह व डॉ. देव राज भूंबला की ओर से डॉ. सुरिंदर कौर संधू, डीन, पीजीएस, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने यह अवार्ड प्राप्त किया।

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि दोनों महान विभूतियों को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड प्रदान करना अत्यंत सम्मान का विषय है। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में अंतर्राष्ट्रीय स्तर के वैज्ञानिक जो अपने जीवन में कृषि व कृषक के उत्थान में लगे रहे बल्कि उनके उत्कृष्ट कार्यों, उपलब्धियों तथा कृषि शिक्षा, अनुसंधान व विस्तार में उनके महत्वपूर्ण योगदान को हमेशा याद रखेगा। उन्होंने बताया कि लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड उस प्रमुख/अधिकारी को दिया जाता है जिन्होंने आजीवन उच्च मानकों का पालन करते हुए अपने क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल की हो तथा अपने करियर के दौरान उच्च मूल्यों के साथ विश्वविद्यालय को ऊंचाइयों तक ले जाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो। ये दोनों महान विभूतियां विद्यार्थियों और वैज्ञानिकों के लिए प्रेरणा स्रोत रहे हैं। यह विश्वविद्यालय सदैव उनका ऋणी रहेगा। इस अवार्ड में सम्मान पट्टिका, प्रशस्ति पत्र और एक लाख रुपए का नकद पुरस्कार शामिल है।

डॉ. लाम्बा का हिसार के दौलतपुर गांव में 10 अक्तूबर, 1920 को जन्म हुआ था। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में 1969 में कृषि महाविद्यालय के डीन का पदभार संभालने के उपरांत वह 1971 से 1973 तक अनुसंधान निदेशक रहे। 1977 में इस विश्वविद्यालय का कुलपति बनने से पूर्व वह महाराणा प्रताप यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एण्ड टैक्नोलोजी, उदयपुर के कुलपति रहे।

डॉ. देव राज भूंबला का जन्म 12 जून 1921 को हुआ था। उन्होंने 1 अक्तूबर 1981 को हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति के रूप में पद संभाला। कुलपति के रूप में, उन्होंने विश्वविद्यालय में कृषि शिक्षा और अनुसंधान के विकास के लिए नए आयाम स्थापित किए।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक हिसार
दिनांक 21.9.2019 पृष्ठ सं. 3 कॉलम 5

डा. पीएस लाम्बा व डा. देवराज भूंबला को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड में सम्मानित किया

हिसारः 21 सितंबर चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्ष 2015-16 के लिए स्वर्गीय डॉ पृथ्वी सिंह लांबा व वर्ष 2017-18 के लिए डॉ. देव राज भूंबला को लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से सम्मानित किया। ये अवार्ड विश्वविद्यालय में आयोजित 13 वें आइएयूए की राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी द्वारा प्रदान किए गए। स्वर्गीय डॉ. पृथ्वी सिंह लांबा की ओर से उनके बड़े बेटे परमजीत सिंह व डॉ. देव राज भूंबला की ओर से डॉ. (श्रीमती) गुरिंदर कौर सांघा, डीन, पीजीएस, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने यह अवार्ड प्राप्त किया।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक जागरण

दिनांक 22.9.2019 पृष्ठ सं 16 कॉलम 1-2

अतिरिक्त खनन से मिट्टी में हुआ पौषक असंतुलन

मुख्य वक्ता डा. आरएस एंटिल कार्यक्रम को संबोधित करते हुए। • जागरण

जागरण संवाददाता, हिसार। एचएयू के मृदा विज्ञान विभाग तथा नई दिल्ली स्थित चैप्टर ऑफ इंडियन सोसायटी ऑफ सॉयल साइंस एंड इंडियन सोसाइटी ऑफ सॉयल साइंस ने संयुक्त रूप से 21वां डा. एसएस रंधावा मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया। इस अवसर पर पूर्व अध्यक्ष (मृदा विज्ञान) डा. आरएस एंटिल मुख्य वक्ता रहे।

उन्होंने भारतीय कृषि में सतत मृदा स्वास्थ्य और फसल उत्पादकता के लिए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर स्मारक व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि ने एक साथ अतिरिक्त खनन के कारण मृदा में पोषक असंतुलन की समस्या पैदा कर दी है। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जांच की जानी है। भले ही भारत खाद्य मोर्चे पर आत्मनिर्भर हो गया हो, लेकिन हमारी सबसे महंगी प्राकृतिक आरक्षित मिट्टी का बड़े पैमाने पर दोहन हुआ है। उन्होंने आइएनएम की भविष्य की अनुसंधान आवश्यकताओं का सुझाव दिया और इस बात पर जोर दिया कि विभिन्न आइएनएम प्रौद्योगिकी को उत्पन्न किया जाना चाहिए और प्रभावी ढंग से विभिन्न फसल प्रणालियों की उत्पादकता को बनाए रखने के लिए किसानों को हस्तांतरित किया जाना चाहिए। इस दौरान मृदा विज्ञान के विभागाध्यक्ष डा. मनोज कुमार शर्मा सहित मृदा विज्ञान के सेवानिवृत्त वैज्ञानिक, विभिन्न विभागों के एचओडी, मृदा विज्ञान विभाग के अधिकारी और छात्र उपस्थित रहे। समापन समारोह के अंत में डा. वीके फोगाट, एमेरिटस प्रोफेसर, मृदा विज्ञान विभाग ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम हरि भूमि
दिनांक 22-9-2019 पृष्ठ सं 12 कॉलम 7-8

मृदा में पोषक असंतुलन की समस्या पैदा हुई : डॉ. एंटिल

हिसार। कार्यक्रम को संबोधित करते मुख्य वक्ता डॉ. आरएस एंटिल।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के मृदा विज्ञान विभाग तथा चैप्टर ऑफ इंडियन सोसायटी ऑफ सॉयल साइंस एंड इंडियन सोसाइटी ऑफ सॉयल साइंस, नई दिल्ली ने संयुक्त रूप से 21 वां डॉ. एस.एस. रंधावा मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया।

इस अवसर पर डॉ. आर.एस. एंटिल पूर्व अध्यक्ष (मृदा विज्ञान) और पूर्व विस्तार शिक्षा निदेशक जोकि वर्तमान में प्रमुख सलाहकार, खाद्य और कृषि फाउंडेशन, एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा (यूपी) के रूप में काम कर रहे है, मुख्य वक्ता थे। इस अवसर पर डॉ. आर.एस. एंटिल ने भारतीय कृषि में सतत मृदा स्वास्थ्य और फसल उत्पादकता के लिए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर स्मारक व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि ने एक साथ अतिरिक्त खनन के कारण मृदा में पोषक असंतुलन की समस्या पैदा कर दी है। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जांच की जानी है। भले ही भारत खाद्य मोर्चे पर आत्मनिर्भर हो गया हो, लेकिन हमारी सबसे महंगी प्राकृतिक आरक्षित मिट्टी का बड़े पैमाने पर दोहन हुआ है।

उन्होंने आईएनएम की भविष्य की अनुसंधान आवश्यकताओं का सुझाव दिया और इस बात पर जोर दिया कि विभिन्न आईएनएम प्रौद्योगिकी को उत्पन्न किया जाना चाहिए और प्रभावी ढंग से विभिन्न फसल प्रणालियों की उत्पादकता को बनाए रखने के लिए किसानों को हस्तांतरित किया जाना चाहिए।

डॉइस कार्यक्रम में मृदा विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा, ने डॉ. एन.एस. रंधावा की लघु जीवनी रेखाचित्र पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि डॉ. रंधावा को सूक्ष्म पोषक तत्व प्रबंधन, मिट्टी की उर्वरता और पौधों के पोषण में अनुसंधान करने के लिए जाना जाता था। उन्हें उप महानिदेशक (मृदा, इंजीनियरिंग और एग्रोनॉमी), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर), नई दिल्ली और बाद में महानिदेशक, आईसीएआर और सचिव, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग, सरकार के रूप में चुना गया था। समापन समारोह के अंत में, डॉ. वी.के. फोगाट, एमेरिटस प्रोफेसर, मृदा विज्ञान विभाग ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर, अमर उजाला
दिनांक 22-9-2017 पृष्ठ सं 3, 6 कॉलम 1-2, 5

अधिक खनन से कम हो रही मिट्टी से उत्पादन शक्तिः रंधवा

भास्कर न्यूज | हिसार

एचएयू के मिट्टी विज्ञान विभाग तथा चैप्टर ऑफ इंडियन सोसायटी ऑफ सॉयल साइंस एंड इंडियन सोसाइटी ऑफ सॉयल साइंस, नई दिल्ली ने संयुक्त रूप से 21 वां डॉ. एस.एस. रंधावा मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया गया। इस अवसर पर डॉ. आर.एस. एंटिल पूर्व अध्यक्ष (मिट्टी विज्ञान) और पूर्व विस्तार शिक्षा निदेशक जोकि वर्तमान में प्रमुख सलाहकार, खाद्य और कृषि फाउंडेशन, एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा (यूपी) के रूप में काम कर रहे है, मुख्य वक्ता रहे। इस अवसर पर डॉ. आर.एस. एंटिल ने भारतीय कृषि में सतत मिट्टी स्वास्थ्य और फसल उत्पादकता के लिए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर स्मारक व्याख्यान दिया।

उन्होंने बताया कि खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि ने एक साथ अतिरिक्त खनन के कारण मिट्टी में पोषक असंतुलन की समस्या पैदा कर दी है। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जाँच की जानी है। इस अवसर पर मिट्टी विज्ञान के सेवानिवृत्त वैज्ञानिक, विभिन्न विभागों के एचओडी, मिट्टी विज्ञान विभाग के अधिकारी और छात्र उपस्थित रहे।

मिट्टी का बड़े पैमाने पर हुआ दोहन : डॉ. एंटिल

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के मृदा विज्ञान विभाग और चैप्टर ऑफ इंडियन सोसाइटी ऑफ सॉयल साइंस एंड इंडियन सोसाइटी ऑफ सॉयल साइंस, नई दिल्ली ने संयुक्त रूप से 21वां डॉ. एसएस रंधावा मेमोरियल लेक्चर आयोजित किया। इस अवसर पर एमिटी यूनिवर्सिटी के खाद्य एवं कृषि फाउंडेशन के प्रमुख सलाहकार डॉ. आरएस एंटिल मुख्य वक्ता थे। इस अवसर पर डॉ. आरएस एंटिल ने भारतीय कृषि में सतत मृदा स्वास्थ्य और फसल उत्पादकता के लिए एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन पर स्मारक व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि ने एक साथ अतिरिक्त खनन के कारण मृदा में पोषक असंतुलन की समस्या पैदा कर दी है। मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए पोषक तत्वों के अतिरिक्त खनन की जांच की जानी है। भले ही भारत खाद्य मोर्चे पर आत्मनिर्भर हो गया हो, लेकिन हमारी सबसे महंगी प्राकृतिक आरक्षित मिट्टी का बड़े पैमाने पर दोहन हुआ है। इस कार्यक्रम में मृदा विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने डॉ. एनएस रंधावा की लघु जीवनी रेखाचित्र पर प्रकाश डाला।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक भास्कर

दिनांक 21.9.2019 पृष्ठ सं. 5 कॉलम 1-6

सेमिनार • एचएयू में भारत में कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग से संबंधित विचार को मानव संसाधन विकास मंत्रालय भेजेगी कमेटी

भास्कर न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय द्वारा इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटीज एसोसिएशन के सहयोग से भारत में कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के अंतिम कमेटी का गठन किया गया। देशभर के कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग से संबंधित विचारों को मानव संसाधन विकास मंत्रालय भेजेगी।

संगोष्ठी में रैंकिंग प्रणाली और अधिक सुदृढ़ व कृषि विश्वविद्यालयों के अनुरूप बनाने के लिए विचार-वमर्श किया गया। रैंकिंग प्रोसेस के अन्दर आईयूए का एक सदस्य शामिल होना चाहिए। रैंकिंग प्रक्रिया में पिछले एक साल की बजाय तीन साल की कार्यकुशलता का आंकलन किया जाना चाहिए। संस्थानों और विश्वविद्यालयों में अलग-अलग रैंकिंग होनी चाहिए क्योंकि कुछ संस्थानों में सिर्फ स्नातकोत्तर कोर्स होते हैं जबकि विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों कोर्स होते हैं। रैंकिंग को एक समान विभिन्न श्रेणीयों के आधार पर विभाजित किया जाना चाहिए, जैसा कि एनआईआरएफ के अंतर्गत किया जाता है। इस सत्र में आईसीआर के वर्तमान मापदंड में सुधार के लिए विस्तृत रिपोर्ट बनाने के लिए एक कमेटी का गठन किया गया जिसमें कुलपति पीएयू के कुलपति डॉ. बी.एस. ढिल्लो, सीसीएचएयू के कुलपति प्रो. के.पी. सिंह, निदेशक-कम-कुलपति आईवीआरआई, डॉ. आर. के. सिंह, निदेशक-कम-कुलपति, सीआईएफई, मुम्बई, डॉ. गोपालकृष्णा, कुलपति डॉ. वाईएसपीयूएचएण्डएफ, नौनी, डॉ. परमिन्द्र कौशल व कुलपति यूएएचएस, शिवामोगा, डॉ. एम.के. नायक शामिल हैं।

इस संगोष्ठी में रैंकिंग क्राइटेरिया फॉर ग्लोबल इंटीग्रेशन एण्ड रीजनल प्रायरिटिज विषय पर प्रथम सत्र में गुजरात जेयू के कुलपति व अध्यक्ष आईएयूए, डॉ. एआर पाठक अध्यक्ष के रूप में, कुलपति एएनजीआरएयू, गंटूर, डॉ. वी. दामोदर नायडू, सह-अध्यक्ष, डीन डॉ. आरके झोरड़ व डॉ. एसके पाहूजा रिपोर्टियर के रूप में उपस्थित थे जिसमें कुलपति सीएसकेएचपीकेवी, पालमपुर डॉ. एके सरियाल ने एकेडमिक एण्ड कोकुरिकुलर एक्टिविटिज, परफोरमेंस इंडीकेटर्स फॉर रिसर्च आउटपुट फॉर एक्सीलेंस पर विचार रखे। एग्रीकल्चरल रिसर्च, एजुकेशन एण्ड एक्सटेंशन-ए ड्राइविंग फोर्स फॉर केपीआई विषय पर तीसरे सत्र में कुलपति एनएयू, नवसारी, डॉ. सीजे डांगरिया, अध्यक्ष कुलपति वीएनएम केवी, परबनी, महाराष्ट्रा डॉ. एएस धवन, सह अध्यक्ष, अनुसंधान निदेशक, डॉ. एसके सहरावत व डॉ. सतीश कुमार रिपोर्टियर के रूप में उपस्थित थे, जिसमें कुलपति बीएसएयू, पटना, डॉ. रामेश्वर सिंह व कुलपति प्रो. केपी सिंह, सीसीएचएयू, हिसार ने अपने-अपने विचार रखे। इसके अलावा सभी विश्वविद्यालय के कुलपतियों ने कहा कि रैंकिंग में बड़े पैमाने पर संसाधन और व्यक्तिगत प्रदर्शन का आंकलन किया जाता है परन्तु कई बार कृषि विश्वविद्यालयों के कई महत्वपूर्ण पहलुओं और भिन्न-भिन्न तरह के योगदानों जैसे कृषि विज्ञान केंद्र, (केवीके), बीज उत्पादन और कृषि विश्वविद्यालयों की प्रौद्योगिकी के योगदान, विश्वविद्यालय प्रकाशन व प्रथम पंक्ति प्रदर्शन जैसे अन्य कार्यों को सम्मलित नहीं किया जाता है।

संगोष्ठी को संबोधित करते कुलपति प्रो. केपी सिंह।

संगोष्ठी से बाहर निकलते हुए कई विश्वविद्यालय के कुलपति।

पेटेंट आदि को बढ़ावा देने के लिए एक कोष विकसित करने की आवश्यकता: प्रो. केपी सिंह

कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय ज्ञान के महासागर की निर्माता हैं। विवि के पास उत्कृष्ट विश्व स्तरीय प्रयोगशाला की सुविधाएं, अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सहयोग और फैकल्टी एक्सचेंज कार्यक्रम होने अति आवश्यक हैं। संस्थानों में गुणवत्ता प्रकाशन, पेटेंट, आदि को बढ़ावा देने के लिए एक कोरपस कोष विकसित करने की आवश्यकता है जिसका उपयोग अंतरराष्ट्रीय संयुक्त परियोजनाओं के वित्त सहयोग के लिए किया जा सकता है। उन्होंने उच्च स्तर के प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों के चयन पर जोर दिया ताकि शिक्षा व अनुसंधान के स्तर को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक ले जाया जा सके। ऑन लाइन कोर्सेस के माध्यम से आउटरीच कार्यक्रम के विकास को बढ़ावा देने का आह्वान किया।

वह रहे मौजूद : संगोष्ठी में कुलपति सीसीएचएयू, प्रो. के.पी.सिंह, कुलपति आईजीकेवीवी, रायपुर, डॉ. एस. के. पाटिल, कुलपति आरवीएसकेवीवीयू, ग्वालियर डॉ. एस.के. राव मौजूद रहे।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम दैनिक जागरण
दिनांक 21.9.2019 पृष्ठ सं. 18 कॉलम 2.5

एनआइआरएफ की रैंकिंग में इंजीनियरिंग और मैनेजमेंट कालेज ले जाते हैं कृषि विवि का हक

देशभर से एचएयू में आए 69 कुलपतियों ने रैंकिंग सिस्टम में सुधार के लिए बनाई रणनीति

जागरण संवाददाता, हिसार : मानव संसाधन विकास मंत्रालय हर वर्ष देशभर के शिक्षण संस्थानों का ऑडिट कर एनआइआरएफ यानि नेशनल इंस्टीट्यूट रैंकिंग फ्रेमवर्क के तहत रैंकिंग जारी करता है। मगर देशभर के कृषि विश्वविद्यालयों को इस रैंकिंग आंकलन के तरीके पर आपत्ति है। उनका कहना है कि इस सिस्टम में इंजीनियरिंग, फार्मेसी या मैनेजमेंट संस्थान, विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों को अधिक वरीयता दी जाती है, जबकि कृषि विश्वविद्यालयों के कई बिंदु रैंकिंग में शामिल तक नहीं हैं। ऐसे में इस सिस्टम में बदलाव लाने के लिए गुरुवार व शुक्रवार को हिसार में देशभर के 69 कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों की कांफ्रेंस आयोजित हुई।

इसका आयोजन

इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटीज एसोसिएशन के बैनर तले हुआ। दो दिवसीय कांफ्रेंस में खुलासा हुआ कि इस रैंकिंग सिस्टम में कृषि विश्वविद्यालयों का योगदान, बीज उत्पादन और कृषि विश्वविद्यालयों की प्रौद्योगिकी के योगदान, प्रकाशन जैसे मुद्दों को तो छोड़ ही दिया जाता है। इसके साथ ही आइसीएआर व एनआइआरएफ के बीच तालमेल का भी अभाव है, क्योंकि अगर तालमेल होता तो एमएचआरडी रैंकिंग व्यवस्था में परिवर्तन करती। इन सब कमियों की वजह से कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग प्रभावित होती है। ऐसे में इन दो दिनों में कृषि विवि ने फैसला लिया है कि वह खुद एमएचआरडी में व्यवस्था परिवर्तन के लिए प्रयास करेंगे। इसके लिए दो कमेटियों का गठन भी किया गया है। कमेटी में एचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह, रायपुर स्थित आइजीके विवि के कुलपति डा. एसके पाटिल, ग्वालियर स्थित आरवीएसकेवीवी यूनिवर्सिटी से कुलपति डा. एसके राव, धारवाड़ स्थित यूएएस से कुलपति डा. एमबी छेत्री को शामिल किया गया है।

हिसार में कुलपति प्रो. केपी सिंह अन्य कुलपतियों के साथ सेशन से बाहर निकलते हुए।

आइसीएआर में यह कमेटी कराएगी सुधार

एनआइआरएफ रैंकिंग के साथ इंडियन एग्रिकल्चर काउंसिल फॉर एग्रीकल्चर रिसर्च में सुधार के लिए एक रिपोर्ट तैयार की जाएगी, जिसको बनाने के लिए भी एक कमेटी का चयन किया जाएगा। इसमें लुधियाना की पीएयू से कुलपति डा. बीएस ढिल्लों, हिसार से एचएयू कुलपति प्रो. केपी सिंह, आइवीआरआइ से कुलपति डा. आरके सिंह, मुंबई की सीआइएफई से डा. गोपालकृष्णा के साथ नोनी स्थित डा. वाइएस परमार यूनिवर्सिटी ऑफ होर्टीकल्चर एंड फॉरेस्ट्री, नोनी के कुलपति डा. परमिंद्र कौशल व शिवामोगा स्थित यूएएसएच से कुलपति डा. एमके नायक शामिल हैं।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार-पत्र का नाम ..... पंजाब केसरी .....

दिनांक 21.9.2019 पृष्ठ सं. 2 कॉलम 3,5

अब विश्वविद्यालयों को कुलपतियों की कमेटी रिपोर्ट के आधार पर मिलेगी रैंकिंग

■ एच.ए.यू. में आयोजित कार्यक्रम में किया कुलपति कमेटी का गठन

एच.ए.यू में आयोजित कार्यक्रम में पहुंचे देशभर के विश्वविद्यालयों के कुलपति।

हिसार, 20 सितम्बर (ब्यूरो): एच.ए.यू. द्वारा इंडियन एग्रीकृचरल यूनिवर्सिटीज एसोसिएशन के सहयोग से भारत में कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग विषय पर 2 दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में 4 तकनीकी सत्र आयोजित किए जिसमें सभी कुलपतियों ने अपने विचार सांझा किए।

इस संगोष्ठी में एक कमेटी का गठन किया गया जो सभी कृषि विश्वविद्यालयों के रैंकिंग से संबंधित विचारों को मानव संसाधन विकास मंत्रालय को भेजा जाएगा।

इसमें एच.ए.यू. कुलपति प्रो. के.पी.सिंह, आई.जी.के.वी.वी. रायपुर के कुलपति डा. एस. के. पाटिल, आर.वी.एस.के.वी.वी.यू ग्वालियर के कुलपति डा. एस.के. राव व कुलपति यू.ए.एस. धारवाड़, डा. एम.बी. छेत्री मुख्य रूप से शामिल रहे। इस संगोष्ठी में रैंकिंग प्रणाली और अधिक सुदृढ़ व कृषि विश्वविद्यालयों के अनुरूप बनाने के लिए निम्नलिखित पहलुओं पर विशेष जोर दिया गया।

रिपोर्ट के लिए कमेटी का किया गठन

आई.सी.आर. के वर्तमान मापदंड में सुधार के लिए विस्तृत रिपोर्ट बनाने के लिए एक कमेटी का गठन किया गया जिसमें कुलपति पी.ए.यू. डॉ. बी.एस. ढिल्लों, कुलपति सी.सी.एच.ए.यू., हिसार प्रो. के.पी.सिंह, निदेशक-कम-कुलपति आई.वी.आर.आई., डॉ. आर.के. सिंह, निदेशक-कम-कुलपति, सी.आई.एफ.ई., मुम्बई, डॉ. गोपालकृष्णा, कुलपति डॉ. वाई.एस.पी.यू.एच.एण्ड.एफ., नोनी, डॉ. परमिन्द्र कौशल व कुलपति यू.ए.एच.एस., शिवामोगा, डॉ. एम.के. नायक को शामिल किया गया।

ये बोले कुलपति

विश्वविद्यालय के कुलपतियों ने कहा कि रैंकिंग में बड़े पैमाने पर संसाधन और व्यक्तिगत प्रदर्शन का आंकलन किया जाता है। कई बार कृषि विश्वविद्यालयों के कई महत्वपूर्ण पहलुओं और भिन्न-भिन्न तरह के योगदानों जैसे कृषि विज्ञान केंद्र, (के.वी.के.), बीज उत्पादन और कृषि विश्वविद्यालयों की प्रौद्योगिकी के योगदान, विश्वविद्यालय प्रकाशन व प्रथम पंक्ति प्रदर्शन जैसे अन्य कार्यों को सम्मलित नहीं किया जाता है। इसलिए नैशनल इंस्टीच्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (एन.आई.आर.एफ.) में विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, इंजीनियरिंग संस्थानों, प्रबंधन संस्थानों, फार्मेसी संस्थानों जैसे शिक्षण संस्थाओं के सुचारू संचालन के लिए कृषि विश्वविद्यालयों के के योगदान को उचित महत्व मिलने तथा इन संस्थानों में अलग-अलग रैंकिंग व्यवस्था को एक जैसा करने पर बल दिया।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम............अमर उजाला............
दिनांक 21.9.2019............ पृष्ठ सं. 2............ कॉलम 1-4............

सभी कृषि विवि के विचारों को एमएचआरडी के पास भेजने के लिए कमेटी का गठन

एचएयू में आईएयूए की दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न, कृषि विवि की रैंकिंग विषय पर किया मंथन

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में इंडियन एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटीज एसोसिएशन (आईएयूए) की राष्ट्रीय संगोष्ठी शुक्रवार को संपन्न हुई। इस दौरान एक कमेटी का गठन किया गया। यह कमेटी सभी कृषि विवि रैंकिंग से संबंधित विचारों को मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) के पास भेजेगी।

बता दें कि नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) द्वारा कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग करते समय कई महत्वपूर्ण पहलुओं को सम्मिलित नहीं किया जाता, जिनमें कृषि विज्ञान केंद्र, बीज उत्पादन, कृषि विवि की प्रौद्योगिकी का योगदान आदि शामिल हैं। इस पर कृषि विवि को आपत्ति है। इसी विषय को लेकर एचएयू में यह राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई थी।

संगोष्ठी में आयोजित हुए चार तकनीक सत्र : दो दिनों तक चली इस संगोष्ठी में चार तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जिसमें सभी कुलपतियों ने अपने विचार साझा किए। इस संगोष्ठी में एक कमेटी का गठन किया गया, जो सभी कृषि विश्वविद्यालयों के रैंकिंग से संबंधित विचारों को मानव संसाधन विकास मंत्रालय के पास भेजेगी। इसमें सीसीएचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह, आईजीकेवीवी रायपुर के कुलपति डॉ. एसके पाटिल, आरवीएसकेवीवीयू ग्वालियर के डॉ. एसके राव और यूएएस, धारवाड़ के कुलपति डॉ. एमबी छेत्ती को शामिल किया गया।

आईसीआर के भी वर्तमान रैंकिंग सिस्टम में सुधार की मांग : संगोष्ठी में एनआईआरएफ के साथ आईसीआर के रैंकिंग सिस्टम को लेकर वर्तमान मापदंड में सुधार की भी मांग उठी। इस दौरान इससे संबंधित एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करने को लेकर भी एक कमेटी का गठन किया गया, जिसमें पीएयू लुधियाना के कुलपति डॉ. बीएस ढिल्लो, सीसीएचएयू हिसार के कुलपति प्रो. केपी सिंह, आईवीआरआई के निदेशक कम कुलपति डॉ. आरके सिंह, सीआईएफई मुंबई के निदेशक कम कुलपति डॉ. गोपाल कृष्णा, वाईएसपीयूएचएंडएफ नौनी के कुलपति डॉ. परमिंद्र कौशल व यूएएचएस शिवामोगा के कुलपति डॉ. एमके नायक शामिल हैं।

कुलपति प्रो. केपी सिंह सेशन को संबोधित करते हुए। - अमर उजाला

रैंकिंग प्रणाली के इन बिंदुओं पर दिया जोर

- रैंकिंग प्रोसेस के अन्दर आईयूए का एक सदस्य शामिल होना चाहिए।
- रैंकिंग प्रक्रिया में पिछले एक साल की बजाय तीन साल की कार्यकुशलता का आकलन किया जाना चाहिए।
- संस्थानों और विवि में अलग-अलग रैंकिंग होनी चाहिए, क्योंकि कुछ संस्थानों में सिर्फ स्नातकोत्तर कोर्स होते हैं, जबकि विवि के पाठ्यक्रम में स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों कोर्स होते हैं।
- रैंकिंग को एक समान विभिन्न श्रेणियों के आधार पर विभाजित किया जाना चाहिए, जैसा कि एनआईआरएफ के अंतर्गत किया जाता है।

प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों का हो चयन

इस दौरान एचएयू के कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कहा कि विश्वविद्यालय ज्ञान के महासागर के निर्माता हैं। ऐसा करने के लिए विश्वविद्यालय के पास उत्कृष्ट विश्व स्तरीय प्रयोगशाला सुविधाएं, अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सहयोग और फैकल्टी एक्सचेंज कार्यक्रम होने अति आवश्यक हैं। संस्थानों में गुणवत्ता प्रकाशन, पेटेंट, आदि को बढ़ावा देने के लिए एक कोरपस कोष विकसित करने की आवश्यकता है, जिसका उपयोग अंतरराष्ट्रीय संयुक्त परियोजनाओं के वित्त सहयोग के लिए किया जा सकता है। उन्होंने उच्च स्तर के प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों के चयन पर जोर दिया, ताकि शिक्षा व अनुसंधान के स्तर को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक ले जाया जा सके। कुलपति ने ऑनलाइन कोर्सेज के माध्यम से आउटरीच कार्यक्रम के विकास को बढ़ावा देने का भी आह्वान किया।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम हरि भूमि
दिनांक 21-9-2019 पृष्ठ सं 11 कॉलम 1-7

हकृवि में कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग विषय को लेकर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन

कृषि विश्वविद्यालयों में प्रकाशन व पेटेंट बढ़ाने के लिए बनाएं कोष

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

विश्वविद्यालय ज्ञान के महासागर के निर्माता होते हैं। इन संस्थानों में गुणवत्ता प्रकाशन, पेटेंट आदि को बढ़ावा देने के लिए कोष विकसित करने की आवश्यकता है। यह बात हकृवि कुलपति प्रो. केपी सिंह ने कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन अवसर पर कही।

■ कृषि विश्वविद्यालयों के कुलपतियों को लेकर की कमेटी गठित

उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के पास उत्कृष्ट विश्वस्तरीय प्रयोगशाला सुविधाएं, अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान सहयोग और फैकल्टी एक्सचेंज जैसे कार्यक्रम होते रहने चाहिए। उन्होंने उच्चस्तर के प्रतिभाशाली वैज्ञानिकों के चयन पर जोर दिया ताकि शिक्षा व अनुसंधान के स्तर को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक ले जाया जा सके।

ऑनलाइन कोर्सिज के माध्यम से आउटरीच कार्यक्रम के विकास को बढ़ावा देने का आह्वान किया। संगोष्ठी में एक कमेटी का गठन किया गया जो सभी कृषि विश्वविद्यालयों के रैंकिंग से संबंधित विचारों को मानव संसाधन विकास मंत्रालय को भेजा जाएगा। इसमें हकृवि कुलपति प्रो. केपी सिंह, कुलपति आईजीकेवीवी रायपुर, डॉ. एसके पाटिल, कुलपति आरवीएसकेवीवीयू, ग्वालियर डॉ. एसके राव व कुलपति यूएएस, धारवाड़, डॉ. एमबी छेत्ती मुख्य रूप से शामिल हैं।

ये लिए गए निर्णय

रैंकिंग प्रोसेस के अन्दर आईयूए का एक सदस्य शामिल होना चाहिए।

रैंकिंग प्रक्रिया में पिछले एक साल की बजाय तीन साल की कार्यकुशलता का आंकलन किया जाना चाहिए।

संस्थानों और विश्वविद्यालयों में अलग-अलग रैंकिंग होनी चाहिए।

रैंकिंग को एक समान विभिन्न श्रेणीयों के आधार पर विभाजित किया जाना चाहिए जैसा कि एनआईआरएफ के अंतर्गत कि या जाता है।

रैंकिंग व्यवस्था हो एक जैसी

संगोष्ठी में सभी विश्वविद्यालय के कुलपतियों ने कहा कि रैंकिंग में बड़े पैमाने पर संसाधन और व्यक्तिगत प्रदर्शन का आकलन किया जाता है। कई बार कृषि विश्वविद्यालयों के कई तरह के योगदानों जैसे कृषि विज्ञान केंद्र, बीज उत्पादन और कृषि विश्वविद्यालयों की प्रौद्योगिकी के योगदान, प्रकाश जैसे कार्यों को सम्मलित नहीं किया जाता है। इसलिए नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क ने विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों, इंजीनियरिंग संस्थानों, प्रबंधन संस्थानों, फार्मेसी संस्थानों जैसे शिक्षण संस्थाओं के सुचारु संचालन के लिए कृषि विश्वविद्यालयों के के योगदान को उचित महत्व मिलने पर बल दिया। इन संस्थानों में अलग-अलग रैंकिंग व्यवस्था को एक जैसा करने पर बल दिया।

कमेटी में ये हुए शामिल

इस सत्र में आईसीआर के वर्तमान मापदंड में सुधार के लिए विस्तृत रिपोर्ट बनाने के लिए एक कमेटी का गठन किया गया। जिसमें कुलपति पीएयू डॉ. बीएस ढिंगों, हकृवि कुलपति प्रो. केपी सिंह, निदेशक-कम-कुलपति आईवीआरआई, डॉ. आरके सिंह, निदेशक-कम-कुलपति, सीआईएफई, मुम्बई, डॉ. गोपालकृष्णा, कुलपति डॉ. वाईएसपीयूएचएंडएफ, नोनी, डॉ. परमिंद्र कौशल व कुलपति यूएएचएस, शिवामोगा, डॉ. एमके नायक शामिल हैं।

हिसार। सेशन को संबोधित करते कुलपति प्रो. केपी सिंह।

लोक संपर्क कार्यालय
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समाचार पत्र का नाम: दैनिक भास्कर
दिनांक: 21.9.2019 पृष्ठ सं. 2 कॉलम 1-7

डांस में दिखी किसान की मेहनत और जवान का शौर्य

देश के जवानों और किसानों को समर्पित रही एचएयू में हुई कल्चरल ईव, से नो टू यूज प्लास्टिक का मैसेज भी दिया

सिटी रिपोर्टर • सीमाओं पर खड़े जवान और खेतों में काम करते किसान देश की बड़ी नींव है। दोनों ही देश की सुरक्षा और तरक्की में अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं। उनके इसी सम्मान पर समर्पित रही एक कल्चरल ईव। इसका आयोजन एचएयू में देश के कृषि विश्वविद्यालयों की रैंकिंग विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में किया गया।

एचएयू की कल्चरल टीम ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में जवानों और किसानों की झलकियों से उनके योगदान को दिखाया। साथ ही 50 मिनट तक बैक टू बैक प्रस्तुतियों में राजस्थान के कालबेलिया, पंजाब के भांगड़ा, हरियाणा के खोड़िया, झूमर जैसे फोक डांस को देखने का मौका मिला। साथ ही कार्यक्रम में क्लासिकल प्रस्तुतियां भी खास रहीं।

टिक टिक टिक प्लास्टिक बच ना पाए रे...

कार्यक्रम के अंत में पेश हुई कोरियोग्राफी ने जमकर तालियां बटोरी। इसमें टिक टिक टिक मिलकर कसम ये खाई रे, टिक टिक टिक प्लास्टिक बच ना पाए रे पर कोरियोग्राफी प्रजेंट की। इसमें कला के माध्यम से ऑडियंस को प्लास्टिक के नुकसानों से अवगत कराया। साथ ही सभी को प्लास्टिक ना यूज करने की कसम भी दी गई।